IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नरेंद्र कोहली के राम कथा उपन्यासों में शोषित नारी का चित्रण

प्रेम कुमारी

शोधार्थी , हिंदी विभाग,

स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर ,

मध्यप्रदेश (भारत)

सांस्कृतिक राष्ट्रवादी उपन्यासकार डॉ नरेंद्र कोहली ने पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की गुत्थियों को सुलझाते हुए आधुनिक समाज की समस्याओं एवं उनके समाधान को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है । वर्तमान समाज में अंधकार, निराशा, भ्रष्टाचार एवं मूल्य हीनता के युग में नरेंद्र कोहली ने समाज में स्त्री के ऊपर होने वाले अत्याचार, अन्याय एवं विभिन्न प्रकार के शोषण को अपने रामकथा उपन्यासों के माध्यम से उजागर किया है । 'अभ्युदय' राम कथा पर आधारित उपन्यास जिसमें उन्होंने सीता, अहिल्या, कौशल्या आदि पौराणिक एवं ऐतिहासिक नारी पात्रों के माध्यम से पुरुष प्रधान समाज में नारी के प्रति हो रहे शोषण को चित्रित किया है । वहीं पुरुष सत्तात्मक समाज द्वारा स्त्रियों के प्रति दुराचार का विरोध मानवीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाली प्रतिनिधि पात्र सीता के माध्यम से करवाया है। कोहली जी ने मिथकीय प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है । जिसमें स्त्री अस्तित्व को लेकर शोषित स्वरों की अभिव्यक्ति हुई है ।

बीज शब्द : नारी जागरण व नारी मुक्ति, अस्तित्व , परंपरागत समाज , रूढ़ियां, पितृसत्तात्मक समाज, अनैतिक

भारतीय समाज में प्राचीन काल में नारी को सम्मान की नजर से देखा जाता था। नारी की तुलना देवताओं की जाती थी ।" यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"[1] कह कर उसकी प्रशंसा की जाती थी । नारी को मंत्रों की रचना करने सभा, समिति और युद्ध में भाग लेने जैसी राजकीय कार्यों में शामिल होने एवं गृह जीवन में भी निर्णय लेने का अधिकार था । गार्गी, मैत्री, सीता, सावित्री, अनुसूया आदि महिला शक्ति के यशस्वी उदाहरण है, जिसमें हमें नारी रचनाशीलता और मानसिकता के प्रमाण मिलते हैं। "असतो माँ सद्गमय /तमसो माँ ज्योतिर्गमय /मृत्योर्मा अमृतंगमय ।"[2] ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी का यह स्वर आज भी हमारी भाषा और भाव का एक अविभाज्य अंग है । परंतु आगे चलकर मध्यकाल में सती प्रथा, बाल विवाह एवं विधवाओं को हेय दृष्टि से देखने जैसी कुरीतियाँ पनपने लगी । लेकिन आधुनिकता में कुरीतियों को समाप्त कर दी गयी । परन्तु दहेज प्रथा, अपहरण, बलात्कार आदि समस्याएं पनपती गई ।नारी जागरण तथा नारी मुक्ति आंदोलन के तहत संपूर्ण विश्व में जो परिस्थितियां उत्पन्न हो रही थी उसका

प्रभाव सीधे विश्व साहित्य पर पड़ा और तत्कालीन परिस्थितियों के चलते विद्वानों ने, साहित्यकारों ने जो ग्रंथ लिखे उसी में नारी मुक्ति की गूंज दूर- दूर तक फैली, भारत में भी कई ऐसे विद्वानों राजा राममोहन राय ,दयानंद सरस्वती ,विवेकानंद आदि ने तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण किया था। रामचंद्र तिवारी जी कहते हैं कि – "यों तो प्रेमचंद युग में ही हिंदी कथा रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था ,किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और नारी शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ ।''[3] प्रेमचंद युग से ही महिलाओं ने लिखना शुरू किया तभी से पितृसत्तात्मक समाज के परंपरागत नियमों को तोड़कर स्त्री ने जब स्वतंत्र रूप से जीने की कोशिश की तो उसपर हज़ार सवाल उठने लगे , तरह -तरह की बातें होने लगी यहां तक कि उसे चरित्रहीन कह दिया गया,वह चरित जो परम्परागत समाज ने उसे दिया था जिसमें पुरुषों की अनुगामिनी बनकर रही हो कभी भी अपने अस्तित्व को न जाने , लेकिन वही स्त्री अपने अस्तित्व को जानकर अपना अधिकार मांगने लगती है, तो उसे चरित्रहीन मान लिया जाता है। "बड़े आश्चर्य की बात है कि हमारे समाज में न्याय दिलाने के क्षेत्र में भी पक्षपात किया जाता है ।"[4]

इस आधुनिक युग में नारी पुरुषों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो चुकी है । उसमें पुरुष की अपेक्षा सहन करने की क्षमता के साथ-साथ नैतिक और आत्मिक बल अधिक है, वह प्रतिकूल स्थितियों में भी नहीं टूटती । नारी एक परिवार की धुरी होती है, वह पुरुष की शक्ति होती है ,व पुत्र का आंचल है। नारी अगर कहीं कमजोर पड़ती है तो सिर्फ दैहिक स्तर पर , पुरुष हमेशा से नारी के सामने निरंतर अपनी छोटे होते अस्तित्व से घबराता है। नारी हीन नहीं होती वह समझी जाती है। नारी अपने अस्तित्व को पहचान दिलाने के लिए हमेशा प्रयासरत है वह शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं। आधुनिक युग की नारियां अपनी चारदीवारी से निकलकर विश्व रंगमंच पर अपनी नई भूमिका में अवतरित हुई है ।और आज नारी आत्मनिर्भरता की जीवन जी रही है। समाज में अगर परिवर्तन हुआ है तो साथ में परिवर्तन हुए हैं जीवन जीने के ढंग में भी। आज नारी और पुरुष दोनों ही अपनी जरूरतें और घर संभालने की जिम्मेदारी को लेकर बाहर निकले हैं इस तरह नारी घर से निकल कर सामाजिक फलक पर अवतरित हुई है और शायद यही वजह रही है कि आज युवा पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी भी नारी के कामकाजी होने के पक्ष में तर्क करते नजर आती है ।नारी अपने आत्मविश्वास के बल पर पूरे समाज का सामना करने का साहस भी रखती हैं, लेकिन फिर भी सामाजिक मान्यता और रूढ़ियां ऐसी हैं, कि ऐसे स्त्रियों को समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है ।समाज में परंपरागत रूप से महिलाओं के साथ भेदभाव हमेशा से रहा है, चूँकि स्त्री समाज का एक अभिन्न अंग होती है, और साहित्य समाज का दर्पण होता है अतः हमारा साहित्य समाज में हो रहे नारी के शोषण की सच्ची तस्वीर दिखाने में पूरी तरह समर्थ है ।समाज की बुराइयों का पर्दाफाश करने तथा उसे सुधारने में साहित्य का बड़ा योगदान रहा है। भारतेंदु, प्रेमचंद जैनेंद्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि सभी साहित्यकारों ने अपने उपन्यास, कविता, लेख ,कहानियां आदि के माध्यम से स्त्री समस्याओं को रचना में उजागर किया है।

नरेंद्र कोहली जी ने स्त्री संवेदना को राम की पौराणिक कथा पर आधारित उपन्यास दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर और युद्ध को लिखकर अपने तत्कालीन समाज के नारी के जिस रूप को दुनिया के सामने अपने उपन्यासों के माध्यम से चित्रित किया है वही रूप 21वीं सदी में चल रहे भारतीय समाज में देखने को मिलती है ।

कोहली जी ने राम कथा पर आधारित' अभ्युदय' में संकलित दीक्षा ,अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध, जैसी प्रसंगों में नारी की शोषण और नारी उद्धार को सीता, अहल्या व अन्य शोषित स्त्रियों के माध्यम से उजागर किया है ।अहिल्या की मिथकीय कथा के माध्यम से नवीन तर्क युक्त रूप में समाज को यह बताया है कि बलात्कृत स्त्री स्वयं ही शिला के रूप में जड़ व निर्जीव हो जाती है , ऐसी नारी की अवहेलना, अपमान व तिरस्कृत ना करके सहानुभूति व आत्मीयता के साथ अपनाना चाहिए जिसकी उसे सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है ,पर इस पुरुष प्रधान समाज में अहल्या एक बलात्कृत शाप ग्रस्त पीड़ित नारी है जो निरअपराध होते हुए भी शापित होकर निर्जन वन में अकेले

जीवन जीने को मजबूर होती है। इंद्र के द्वारा किए गए अहल्या का शीलभंग करना और फिर जाते-जाते यह कह जाना कि "पहले स्वयं बुला लिया और अब नाटक कर रही है।"[5] जाते-जाते अहल्या पर लांछन लगा गया , लेकिन, फिर समाज का उसकी बात पर सहमति जताना यह सिद्ध करता है कि पुरुष कुछ भी करें सही है ,मगर स्त्री सही होते हुए भी गलत साबित हो जाती है।

रामकथा कालजई चेतना में के०सी० सिंधु ने लिखा है कि यह जड़ स्थिति केवल आर्यावर्त की नहीं है, संपूर्ण आर्यावर्त की स्थिति है, इसीलिए आर्यावर्त को राम जैसे युगपुरुष की प्रतीक्षा है, अकेली अहल्या जड़ नहीं हो गई थी संपूर्ण आर्यावर्त जड़ हो चुका है । "अहल्या के साथ सामाजिक रूढ़ियों की बात जोड़कर भारतीय समाज में हो रहे अत्याचार की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है समाज में पीड़ित और तिरस्कृत वर्ग के उद्धार के लिए एक सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता है, धैर्य एवं साहस की आवश्यकता लेखक ने रेखांकित की है।"[6]

आधुनिक समाज में कितनी ही नारियाँ सामाजिक मापदंडों में रहकर भी सुरक्षित नहीं हैं ,उन्हें सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार उनसे छीन लिया जाता है । बच्चियों, किशोरियों, स्त्रियों का अपहरण कर उन्हें वासना का शिकार बना कितनों को मौत के घाट उतार दिया जाता है ,यह चित्र हर युग में देखने को मिल ही जाती है ।कोहली जी ने भी देखा सुना होगा जिसको उन्होंने अपनी उपन्यास दीक्षा में स्थान दिया है । राजा दशरथ के राज्य की सीमा के भीतर भी स्थित ग्राम में रहने वाले निषाद जाति के एक परिवार की करुण कथा को उजागर किया गया है, जिसमें निषाद जाति के एक परिवार की स्त्रियों पर राक्षसी वृत्ति वाले आर्य पुरुषों द्वारा किए गए जघन्य अपराध को अजानबाहू के माध्यम से वर्तमान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। अजानबाहू विश्वामित्र को बताते हैं कि-" अवसर देखकर आर्य युवकों का वही दल ग्राम में घुस आया, अकेला अस्वस्थ गहन क्या करता ।उन्होंने उसे पकड़कर एक खंभे के साथ बांध दिया। उसकी वृद्धा पत्नी, युवा पुत्रवधुओं तथा वाला दुहिता को पकड़कर गहन के सम्मुख ही नग्न कर दिया। उन्होंने वृद्ध गहन की आँखों के सम्मुख बारी-बारी उन स्त्रियों का शीलभंग किया फिर उन्होंने जीवित गहन को आग लगा दी, और जीवित जलते हुए गहन की उस चिता में लौह शलाकाएँ गर्म कर -करके उन स्त्रियों के गुप्तांगों पर उनकी जाति चिन्हित की---- ।"[7] ऐसा जघन्य अपराध राक्षसी प्रवृत्ति ही वाले करते हैं और वास्तव में यह स्वातंत्र्योत्तर भारत के यथार्थ का ही प्रतिबिंब है, जिसमें मानवीय संवेदना खत्म हो गई है। मानव की राक्षसी वृत्तियां गौरवान्वित हो रही है और समाज में दुष्टता, हिंसा करने वाले ही सुखी और संतुष्ट दिखाई देते हैं ।

अभ्युदय के 'अवसर खंड' में एक ऐसा ही प्रसंग आता है, जब सीता वन जा रही होती है, उसकी भेंट सुमेधा से होती है जिसके पिता धनिक वर्ग का कर्ज नहीं चुका पाते हैं और आजीवन उसके दास होते हैं ,ऐसी स्थिति में सुमेधा दासी हो जाती है । वह सीता से कहती है-" यह तो स्वामी की इच्छा पर है ,वे चाहे मेरा विवाह कर दे ।वे चाहे मुझे किसी को दे दे,वे चाहे मेरा भोग करें । वे चाहे मुझे खा जाये ।"[8] इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि इस पितृसत्तात्मक परिवार में लड़कियां कितनी सहज भाव से सब कुछ स्वीकार कर लेती है, जैसे वह कोई बंधुआ मजदूर हो और उसकी डोर सशक्त बलों के हाथों में हो , उसकी अपनी कोई भावना ना हो ।

रामकथा उपन्यास में वर्णित सभी पात्र अपने अपने स्थान पर दुखी हैं ,शोषित है । सभी सामाजिक परतंत्रता के कारण छटपटा रही हैं ।"दीक्षा खंड' में जब गगन अपनी टोली के साथ लौट आया उसके साथ चार स्त्रियाँ थी राम ने देखा -" वे प्राय युवतियां थी उनके शरीर पर अत्यंत संक्षिप्त वस्त्र थे। मुख मुरझाये हुए ,मानो वर्षों से रोगिणी हों ।पीड़ित- यातना की प्रतिमूर्तियां ।"[9] गगन कहता है - " ये अभागिनी कन्याए बंदिनी रूप में इन घरों में मिली है । किसी के हाथ -पाव बंधे थे , कोई पशु के समान किसी कोठरी में बंद थी।"[10] इन प्रसंगों के माध्यम से कोहली जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समाज में नारी के ऊपर इतना अत्याचार, अनाचार होता है और इस क्रूर समाज ने इनका मनोबल इतना तोड़ दिया है कि स्त्री सब कुछ सहने को मजबूर हो गई है। इसी प्रसंग में विश्वामित्र कहते हैं – "राम ! हमारा समाज इन संदर्भों में अभी इतना उदार नहीं हैं कि उन युवतियों

को अपेक्षित सम्मान दे सके ।मर्यादा कि रूढ़ परिकल्पना में बंधा हुआ यह जन-मानस यदि उन्हें पतित मानकर उनका अपमान कर बैठा तो ?और उनमें से अनेक युवतियों में मुझे गर्भ के लक्षण दिखाई पड़े हैं ।उनकी संतान के भविष्य के विषय में भी मैं आशंकित हूँ पुत्र !"[11] आज भी समाज में विश्वामित्र की यह आशंका परिलक्षित होती है । वर्तमान समय में भी स्त्रियों को अपने और अपने अनचाहे गर्भ से उत्पन्न बच्चे के अस्तित्व को लेकर अकेले ही समाज के प्रति विद्रोह करना पड़ता है।समाज मे अबला ,असहाय नारी के ऊपर अत्याचार होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता, जहां पुरुष मदिरा पीकर स्त्री को पीटता हो अगर उसकी आज्ञा में किसी प्रकार की कमी रह जाती है तो , ऐसे समाज में स्त्री की सुरक्षा एवं सहायता उन्हें कहीं से भी नहीं मिलती है । नारी के ऊपर हो रहे शोषण के उच्च स्तर का विकृत रूप आज भी वर्तमान समाज में देखने को मिलती ही है ,जिससे यह साबित होता है कि समय में जरूर परिवर्तन हुआ है पर न समाज का रूप बदला है और न नारी शोषण की विकृत स्वरूप ।

कौशल्या के माध्यम से कोहली जी ने 'अभ्युदय' उपन्यास के 'दीक्षा 'खंड में ऐसी स्त्री का चित्रण किया है ,जो परतंत्रता का जीवन जीती है । उसके विवाह आदि महत्वपूर्ण निर्णय भी पिता पर निर्भर रहता है । स्वयं की कोई इच्छा महत्वपूर्ण नहीं होती है । वह परंपरागत रीति- रिवाज और संस्कारों को संभाले नए जीवन में प्रवेश करती है ,और ससुर की आज्ञा ,इच्छाओं का पालन करने का प्रयत्न करते जीवन जीने की आदी हो जाती है, क्योंकि वह जानती है कि-" मानव वंश में नारी पूर्णता: पति के अधीन है, उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है । यह वंश समाज में पितृसत्ता को उसकी पराकाष्ठा तक ले गया था । कौशल्या ने अपने मायके में भी यही देखा था और ससुराल में भी वही देख रही थी। वह व्यक्ति नहीं थी ,वह उस वंश की पुत्रवधू थी उन्हें वही रहना था परिवार के लिए उसकी सुख सुविधा के लिए उन्हें अपने व्यक्तित्व का बलिदान करना था।"[12] इस समाज में रूढ़िवादी विचारधारा अभी तक चल रही है, कि नारी को अपनी सुरक्षा अपनी भावना को व्यक्त करने का यह समाज स्वीकृति नहीं देना चाहती ।

एक ऐसी ही स्त्री सीता की भी इस उपन्यास में चित्रण किया गया है जो 'अवसर खंड 'से वर्णित है ,जिसमें सीता कहती है कि " नारी कहीं शोभा की वस्तु है ,कहीं भोग की, कहीं वह अत्यंत शोषित है, कहीं परजीवी ।----- नारी जो अपने पति के माध्यम से समाज का रस खींचती है, समाज से उनका कोई सीधा संबंध ही नहीं है------- उनकी सामाजिक उपयोगिता शून्य है ,और उनकी आवश्यकताएं आसमान को छू रही है।"[13] सीता इस तरह का जीवन नहीं जीना चाहती वह एक सक्रिय पात्र होकर भी कुछ नहीं कर पाती है, क्योंकि यह रूढ़ व्यवस्था नारी को पुरुष की बराबरी का स्थान देने के लिए इच्छुक नहीं है। नारी केवल भोग विलास की वस्तु बनकर रह गई है ।

निष्कर्ष:-- स्त्री समस्या विश्व साहित्य में ध्यान आकर्षण का विषय रही है । इस आधुनिक युग में भी समाज सुधारकों का ही नहीं , साहित्यकारों का ध्यान भी नारी से संबद्ध विभिन्न समस्याओं की ओर विशिष्ट रूप से आकृष्ट हुआ । कोहली जी ने भी युग- युग से पीड़ित व प्रताड़ित नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण बड़े ही संवेदनशीलता के साथ किया है । प्रत्येक स्थिति को प्राचीन समाज से वर्तमान समाज के बीच सफलतापूर्वक दर्शाया है। पात्रों के माध्यम से कोहली जी ने नारी समस्या तथा जड़ हुए मानसिकता को चित्रित किया है। अहिल्या इंद्र के द्वारा छली जाकर वह अपने त्यागमय जीवन में संपूर्ण मानव समाज से वर्षों तक एकांत में रहकर जीवन जीने को विवश हो जाती है ।

'अभ्युदय' उपन्यास में संकलित दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, खंडों के माध्यम से नारी की समस्याओं को चित्रित ही नहीं किया गया ,बल्कि यह दर्शाने का प्रयास किया गया है, कि वर्तमान समय में भी समाज में नारी का उसी तरह शोषण प्रतिलक्षित होता है । रामयुगीन समाज में नारी की दयनीय स्थिति वर्तमान समाज में नारी उद्धार के लिए एक विशेष चिंतन की दिशा निर्धारित करती है ।पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के तहत अहिल्या, कौशल्या ,सीता जैसी नारी पात्रों को शोषित दिखाया गया है। निषाद स्त्रियों का यौन उत्पीड़न हो या इंद्र के द्वारा अहिल्या का शीलभंग हो जाना, कौशल्या का अपने ही ससुराल में परतंत्रता एवं उपेक्षा का जीवन व्यतीत करना या फिर कर्ज न चुका पाने की स्थिति में

युवतियों का दासी बनकर रहना नारी की स्थिति की सभी समस्याएं तत्कालीन समाज की विकृत मानसिकता को रेखांकित करते हुए आधुनिक समाज का चित्रण करती है । सभी नारी पात्रों के माध्यम से समाज में हो रहे शोषण की सीमाओं और पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति का आकलन प्रस्तुत किया गया है । धार्मिक और सामाजिक मान्यताएं गढ़कर संस्कार और पाप-पुण्य की परिभाषाएं बनाकर उन्हें उनके ही दायरों में बंद कर दिया गया है । संकीर्ण, स्वार्थी मनोवृति के कारण समाज में अन्याय ,अत्याचार और शोषण फलता- फूलता रहता है।

मानवीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाली सीता जैसी क्रांतिकारी नारी के चित्र को भी दर्शाया गया है, जो वर्तमान समाज की स्त्रियों में विद्रोही स्वरों को जागृत करने की क्षमता रखती है । 'अभ्युदय' 'उपन्यास की रचना कर कोहली जी ने पाठकों को वर्तमान युग में अवस्थित नारी शोषण को देखने और समझने का मौका दिया है। एवं समाज में स्त्रियों के प्रति अनैतिक व्यवहार को रामकथा के पौराणिक पात्रों एवं प्रसंगों के माध्यम से आधुनिक समाज की व्याख्या की है।

संदर्भ ग्रंथ ---

1--https://www.mpgkpdf.com/2022/02/feminism-in-hindi-literature.html?m=1

2--http://agree.tezu.ernet.in•>jspui

3--सुरेंद्र वर्मा के साहित्य में कामकाजी नारी -अनुसंधान पत्रिका जनवरी-जून 2015

4--नरेन्द्र कोहली ,अभ्युदय : भाग 1 'दीक्षा खण्ड ' डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.)लि. नई दिल्ली ,सं- 2016 पृष्ठ संख्या 113

5--के०सी०सिंधु , 'रामकथा: कालजयी चेतना ' वाणी प्रकाशन ,प्रथम संस्करण 2007नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 35

6--नरेंद्र कोहली ,अभ्युदय :भाग 1,दीक्षा खण्ड ,डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा•)लि•नई दिल्ली ,संस्करण 2016,पृष्ठ संख्या 17

7--नरेन्द्र कोहली ,अभ्युदय -भाग1 'अवसर' खण्ड ,डायमंड पॉकेट बुक्स(प्रा•) लि•,नई दिल्ली ,संस्करण 2016 ,पृष्ठ संख्या 302

8--नरेंद्र कोहली ,अभ्युदय भाग1: 'दीक्षा' खण्ड ,डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा•)लि• नई दिल्ली संस्करण 2016 पृष्ठ संख्या 82

9--वही पृष्ठ 86

10--वही पृष्ठ 30

11--नरेन्द्र कोहली ,अभ्युदय भाग 1- अवसर 'खंड डायमंड पॉकेट बुक्स(प्रा•) लि•

नई दिल्ली संस्करण2016 पृष्ठ संख्या 207